अतिआधुनिकता संस्कृति के लिए घातक

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आधुनिकता से तात्पर्य वर्तमान युग की सभ्यता से है। यह विषय संस्कृति से जुड़ा हुआ है। प्राच्य सभ्यता और पाश्चात्य सभ्यता दो संस्कृतियां है। भारतीय सभ्यता प्राच्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। समाज की मान्यताओं के अनुसार नियम रीतिरिवाज बनाये जाते है। यदि समाज के विरुद्ध कोई कार्य किया जाता है तो समाज उसे मान्यता नहीं देता। भारतीय समाज में आत्मा, जीव जगत धर्म कर्म को मान्यता मिली है। भारतीय संस्कृति का उद्देश्य मानव कल्याण करना है। प्राचीनकाल से ही भारतीय ऋषियों ने भीतर और बाहर के जगत में सन्तुलन बैठाकर जीवन शैली का निर्माण किया है। जीवन जीने के मापदण्ड धर्म से अनुप्राणित है। खाना–पीना, रहना, जीवनयापन करना, परोपकार, सत्संगति आदि जीवन मूल्य हैं। पाश्चात्य संस्कृति बाह्य जगत में विश्वास करती है। पाश्चात्य संस्कृति में खाओ पीयो और मस्त रहो पर अधिक जोर दिया जाता है। प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृति में जो अन्तर है वह अतिआधुनिकता को लेकर है। हमारे देश में षोडस संस्कारों के माध्यम से जीवन को नियन्त्रित किया गया है। किन्तु पाश्चात्य संस्कृति में नग्नता को प्रधानता दी गयी है। भारतीय संस्कृति में शालीनता है। पाश्चात्य संस्कृति में खुलापन है। आधुनिक युवावर्ग भी पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहा है। वैश्वीकरण ने दूरियों को कम कर दिया है। भारतीय संस्कृति में बार में जाना, शारीरिक सम्बन्ध बनाना, नशा करना, खुलापन आदि के कारण अतिआधुनिकता को अपनाया जा रहा है। पारिवारिक मर्यादाए टूट रही है। नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। यह संस्कृति के लिए बहुत घातक है। लड़के–लड़कियां साथ–साथ नाच रहे हैं, गा रहे हैं, विवाह शादियों में अश्लिल प्रदर्शन कर रहे हैं। ये सब कार्य भारतीय संस्कृति के मूल्यों के प्रतिकूल हैं। जब से वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला है तब से पाश्चात्य सभ्यता का दुष्प्रभाव भारतीय संस्कृति में भी

दिखाई देने लगा है। पाश्चात्य संस्कृति का खुलापन भारतीय संस्कृति को भी विकृत बना रहा है।

प्राच्य संस्कृति से तात्पर्य है भारत की संस्कृति से। भारत प्राच्य संस्कृति का सबसे प्रमुख देश है। इस संस्कृति में चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। यहां कहा गया है कि यदि किसी आदमी के चरित्र पर दाग लग जाये तो वह मृत्यु से भी निंदनीय है। इसलिए यहां पर चरित्र की रक्षा के लिए बहुत बल दिया गया है। चौरासी लाख योनियों में सभी जीव अपने कर्म के अनुसार जन्म लेते रहते हैं और मरते रहते हैं। भारत में जीव, जगत, आत्मा, ईश्वर, परमात्मा और मोक्ष विषयक चिंतन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। पाश्चात्य जगत् में पदार्थों पर अधिक चिंतन किया गया है। वहां पर आत्मा–परमात्मा जैसे विषयों पर चिंतन अधिक नहीं मिलता। पाश्चात्यों का दृष्टिकोण अधिकतर भौतिकवादी है। इसलिए वे भौतिक पदार्थों के ऊपर अधिक चिंतन करते हैं और इस क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। भारत में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को चार पुरुषार्थ माना गया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रम माने गये हैं। यहां पर संयुक्त परिवार प्रथा को अधिक महत्व दिया गया है। संस्कारों के अनुरूप जीवन बिताने और संस्कारों का जीवन में आचरण करने का उपदेश पदे–पदे पर मिलता है। इन्हीं सब कारणों से भारत को विश्व गुरू कहा जाता है। पाश्चात्य जगत में यह सब बातें उतनी मात्रा में नहीं दिखायी देती जितनी भारत में। मानव जन्म बहुत दुर्लभ है, इसे पाकर जो मनुष्य आत्मोपलब्धि नहीं करता वह बहुत बड़ी भूल करता है। जब तक यह दुर्लभ मानव शरीर विद्यमान है, तभी तक शीघ्र से शीघ्र परमतत्त्व को जान लिया जाय तो सब प्रकार से कुशल है। यदि यह अवसर व्यर्थ हो गया तो महान् विनाश हो जायेगा–बार–बार मृत्यु रूप संसार के प्रवाह में बहना पड़ेगा। संसार के त्रिविधतापों और विविध शूलों से बचने का यही एक परम साधन है।

मनुष्य जन्म के सिवा और जितनी योनियां हैं, सभी केवल कर्मों का फल भोगने के लिये ही मिलती हैं। इसके अनुसार मानव जीवन का परम लक्ष्य आत्मामृत की प्राप्ति ही है। प्राच्य संस्कृति में ज्ञान को बहुत महत्व दिया गया है। यहां कहा गया है कि ज्ञान के बिना मोक्ष संभव नहीं। ज्ञान के द्वारा कर्मों को नष्ट किया जाता है। ज्ञान वह अग्नि है जो ईन्धनतुल्य

सभी कर्मों को भस्म कर देती है। अतः ज्ञान के समान कुछ भी पवित्र नहीं हैं। पदार्थ को हम जड़ कहते हैं। पदार्थ विषयक चिंतन पाश्चात्य संस्कृति के केन्द्र में है। पाश्चात्य जगत में आत्मा जीव, जगत, पुनर्जन्म, मोक्ष विषयक चिंतन को अधिक महत्व नहीं दिया गया है। भारत में चेतना पर अधिक चिंतन किया गया है और योग के द्वारा इसकी गहराई में उतरकर साक्षात्कार करने का प्रयास किया गया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आत्मा शुद्ध–बुद्ध–मुक्त और चैतन्य स्वरूप है। जैसे सूर्य संसार को प्रकाशित करता है वैसे ही आत्मा अन्तःकरण को प्रकाशित करती है। जीवन का अंतिम उद्देश्य यहां मोक्ष को माना गया है। मोक्ष का अर्थ है जन्म–कर्म के बंधन से मुक्त होकर के आत्मा का अपने स्वरूप में स्थिर हो जाना। जिससे इस संसार में जीव का पुनरावगमन न हो। पाश्चात्य संस्कृति में खुलापन अधिक दिखलायी देता है। वहां पर नग्नता को एक फैशन माना जाता है। अंगप्रदर्शन की प्रवृत्ति वहां अधिक है, जबकि भारतीय संस्कृति में इन सबका निषेध है। आधुनिकता से कोई परहेज नहीं है किन्तु अतिआधुनिकता विनाश की ओर ले जाती है। इसलिए अतिआधुनिकता को छोड़कर आधुनिक और सुसंस्कारित बनना चाहिए।